सामाजिक विज्ञान

भारत और समकालीन विश्व-1

कक्षा 9 के लिए इतिहास की पाठ्यपुस्तक

0967

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

2019-2020

प्रथम संस्करण
मई 2006 ज्येष्ठ 1927

पुनर्मुद्रण
फरवरी 2007 माघ 1928
फरवरी 2009 माघ 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
नवंबर 2010 कार्तिक 1932
जनवरी 2012 माघ 1933
अक्तूबर 2012 आश्विन 1934
फरवरी 2014 माघ 1935
दिसंबर 2014 पौष 1936
फरवरी 2016 माघ 1937
दिसंबर 2017 पौष 1939
जनवरी 2019 माघ 1940

PD 75T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2006

₹ 115.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित तथा हरिहर प्रिंटर्स, जी-139, हीरावाला इंडस्ट्रियल एरिया, रोड़ नं. 1 कनोटा, आगरा रोड, जयपुर द्वारा मुद्रित।

ISBN 81-7450-571-7

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*एम. सिराज अनवर*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*गौतम गांगुली*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
सहायक संपादक	:	*शशि चड्डा*
उत्पादन सहायक	:	*राजेश पिप्पल*

आवरण एवं सज्जा
पार्थिव शाह तथा उनकी सहायक श्राबोनी राय एवं शशि प्रभा झा

चित्रांकन
के. वर्गीज़

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और अपने अनुभव पर विचार करने का अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नये ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों व स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितनी वार्षिक कैलेण्डर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत व बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् सामाजिक विज्ञान सलाहकार समूह के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर हरि वासुदेवन और इतिहास पाठ्यपुस्तक समिति के मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर नीलाद्रि भट्टाचार्य की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में कई शिक्षकों ने योगदान दिया; इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री और सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया।

हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों व सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
20 दिसंबर 2005

2019-2020

इतिहास और बदलती दुनिया

रोज़मर्रा की ज़िंदगी जीते हुए जब हम अखबारों में दुनिया भर की घटनाओं के बारे में पढ़ते हैं तो आमतौर पर हम ठहर कर उन घटनाओं के लंबे इतिहास के बारे में नहीं सोचते। चीज़ें हमारी आँखों के सामने बदलती रहती हैं लेकिन हम कभी ये नहीं सोचते कि वह बदल क्यों रही हैं? बल्कि अकसर हम इस बात पर भी ध्यान नहीं देते कि पहले चीज़ें ऐसी नहीं थीं। इन बदलावों पर लगातार नज़र रखना, ये समझना कि बदलाव क्यों और कैसे आ रहे हैं, और यह भी कि हम आज जिस दुनिया में जी रहे हैं वह कैसे बनी है – यही इतिहास है।

कक्षा IX और X की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों का मुख्य ज़ोर यही समझने पर है कि समकालीन विश्व कैसे बना है। पिछली कक्षाओं (VI-VIII) में आपने भारत के इतिहास के बारे में पढ़ा है। अगले दो सालों (कक्षा IX और X) की इतिहास की पुस्तकों में आप यह जानेंगे कि किस तरह भारत के अतीत की कहानी दुनिया के लंबे इतिहास से जुड़ी हुई है। जब तक हम इस संबंध पर विचार नहीं करेंगे तब तक इस बात को अच्छी तरह नहीं समझ पाएँगे कि भारत में क्या और कैसे हो रहा था। यह बात इसलिए और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है कि आज तमाम अर्थव्यवस्थाएँ और समाज दिनोंदिन गहरे तौर पर एक-दूसरे से जुड़ते जा रहे हैं। इतिहास को हमेशा भौगोलिक सीमाओं में बंद करके नहीं देखा जा सकता।

वैसे भी राष्ट्रीय भौगोलिक सीमाओं को ही अपने अध्ययन का एकमात्र केंद्रबिंदु मान लेना ठीक नहीं होगा। कई बार ऐसे मौके आते हैं जब एक छोटे से क्षेत्र – एक इलाके, एक गाँव, किसी रेगिस्तानी पट्टी, किसी जंगल, या किसी पहाड़ – पर ध्यान केंद्रित करने से हमें लोगों के जीवन में मौजूद भारी विविधता और उन इतिहासों को समझने में मदद मिलती है जिनसे किसी राष्ट्र का इतिहास बनता है। न तो हम लोगों के बिना राष्ट्र की बात कर सकते हैं और न ही राष्ट्र के बिना किसी इलाके की बात कर सकते हैं। फ़्रांसीसी इतिहासकार फ़र्नांड ब्रॉदेल के शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि 'विश्व के बिना राष्ट्र की बात नहीं की जा सकती'।

अगले दो साल आप जो पाठ्यपुस्तकें पढ़ेंगे उनमें इसी लक्ष्य को अलग-अलग स्तरों पर साधने की कोशिश की गई है। इस दौरान हम कुछ खास समुदायों और इलाकों का अध्ययन करते हुए राष्ट्र के इतिहास तक और भारत व यूरोप के इतिहास से होते हुए अफ़्रीका और इंडोनेशिया के घटनाक्रमों तक जाएंगे। हमारे अध्ययन का केंद्र विषय के हिसाब से बदलता जाएगा।

ये विषय क्या हैं और उन्हें कैसे व्यवस्थित किया गया है? विषयवस्तु का चुनाव किस आधार पर किया गया है?

अब तक आधुनिक विश्व का इतिहास अकसर पश्चिमी दुनिया के इतिहास पर आश्रित रहा है। मानो सारे परिवर्तन और सारी तरक्की सिर्फ़ पश्चिम में ही होती रही हो। मानो बाकी देशों के इतिहास एक समय के बाद ठहर कर रह गए हों, गतिहीन और जड़ हो गए हों। इस इतिहास में पश्चिम के लोग उद्यमशील, रचनात्मक, वैज्ञानिक मेधायुक्त, मेहनती, कुशल और बदलाव के लिए तत्पर दिखाई पड़ते हैं। दूसरी तरफ़ पूर्वी

समाज – या अफ़्रीका और दक्षिणी अमेरिका – के लोगों को परंपरानिष्ठ, आलसी, अंधविश्वासी, और बदलावों से कन्नी काटने वाला दिखाया जाता है।

इतिहासकार बहुत सालों से इन स्थापनाओं पर सवाल खड़ा करते आ रहे हैं। अब हम अच्छी तरह जान चुके हैं कि हरेक समाज में परिवर्तन का अपना इतिहास होता है। इसीलिए आधुनिक विश्व की रचना को समझने के लिए हमें इस बात पर ध्यान देना पड़ेगा कि विभिन्न समाजों ने इन बदलावों को किस तरह अनुभव किया और उन्हें कैसे शक्ल दी है। हमें देखना पड़ेगा कि अलग-अलग देशों के इतिहास किस प्रकार एक-दूसरे से जुड़ रहे हैं। कैसे एक समाज में हुए बदलावों का असर दूसरे समाज में देखा जा सकता है; कैसे भारत व अन्य उपनिवेशों की घटनाओं ने यूरोप को प्रभावित किया। आशय यह कि समकालीन विश्व का रूप-स्वरूप सिर्फ़ पश्चिम से तय नहीं हुआ है।

समकालीन विश्व का इतिहास सिर्फ़ उद्योग और व्यापार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, रेलवे और सड़कों का इतिहास नहीं है। इनके साथ-साथ यह वनवासियों और चरवाहों, घुमंतू काश्तकारों और छोटे किसानों का भी इतिहास है। इन सभी सामाजिक समूहों ने आज की दुनिया को आज जैसा बनाने में अपना योगदान दिया है। इस साल आप इस विविधता भरी दुनिया के बारे में ही पढ़ने जा रहे हैं।

दोनों किताबों के खंड I में कुछ ऐसी घटनाओं और प्रक्रियाओं पर ध्यान दिया गया है जो आधुनिक विश्व को समझने की दृष्टि से काफ़ी महत्त्वपूर्ण हैं। इस साल खंड I में आप फ्रांसीसी क्रांति, रूसी क्रांति और नात्सीवाद के बारे में पढ़ेंगे। अगले साल आप भारत में राष्ट्रवाद और उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलनों के बारे में जानेंगे।

खंड II में नाटकीय घटनाओं पर दृष्टिपात करते हुए हम लोगों के जीवन की सामान्य बातों – उनकी आर्थिक गतिविधियों और आजीविका के स्वरूप – तक जाएंगे। इस हिस्से में आप देखेंगे कि जनजातीय समुदायों और चरवाहों के लिए समकालीन विश्व का क्या मतलब रहा है; उन्होंने इन बदलावों का सामना किस तरह किया और उन्हें किस तरह प्रभावित किया। अगले साल आप औद्योगीकरण और शहरीकरण, पूँजीवाद और उपनिवेशाद के बारे में और विस्तार से जानेंगे।

बेशक, हम इन चीज़ों के बारे में बहुत कुछ पढ़ते रहते हैं। लेकिन इनके बारे में हम जो कुछ पढ़ते हैं उससे हमें इनके इतिहास के बारे में कुछ खास पता नहीं चल पाता। हमें ये पता नहीं चल पाता कि ये चीज़ें किस तरह विकसित हुई हैं और क्यों बदलती हैं। जब हम अपने आस-पास की चीज़ों के बारे में इतिहास की दृष्टि से सवाल उठाना सीख जाते हैं तो इतिहास एक नया अर्थ ग्रहण कर लेता है। हमें रोज़मर्रा की साधारण चीज़ों को भी एक अलग कोण से देखने का मौका मिल जाता है। हमें अहसास होने लगता है कि जो चीज़ें इतनी मामूली दिखाई देती हैं उनका भी एक इतिहास है जो हमारे लिए महत्त्वपूर्ण है।

समकालीन विश्व किस तरह अस्तित्व में आया है, इसे समझने के लिए हम भारत से अफ़्रीका और यूरोप से इंडोनेशिया तक का सफ़र करेंगे। इस क्रम में हम बड़ी-बड़ी घटनाओं के बारे में भी पढ़ेंगे और दैनिक जीवन को भी करीब से देखेंगे। इन यात्राओं के दौरान आप खुद महसूस करने लगेंगे कि इतिहास भी कितना दिलचस्प हो सकता है, जिस दुनिया में हम रहते हैं उसे समझने में कितना मददगार हो सकता है।

नीलाद्रि भट्टाचार्य
मुख्य सलाहकार – इतिहास

पाठ्यपुस्तक विकास समिति

अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

हरि वासुदेवन, *प्रोफ़ेसर,* इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

मुख्य सलाहकार

नीलाद्रि भट्टाचार्य, *प्रोफ़ेसर,* ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र, समाज विज्ञान संस्थान, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

सदस्य

मोनिका जुनेजा, *प्रोफ़ेसर,* मारिया-गोएप्पेर्ट-मेयर गेस्ट प्रोफ़ेसर, हिस्टोरिचेस सेमिनार, हनोवर विश्वविद्यालय, जर्मनी

वंदना जोशी, *लेक्चरर,* श्री वेंकटेस्वर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

नंदिनी सुंदर, *प्रोफ़ेसर,* समाजशास्त्र विभाग, दिल्ली स्कूल ऑफ़ इकनॉमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

मुकुल केसवन, *प्रोफ़ेसर,* इतिहास विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली

जानकी नायर, *प्रोफ़ेसर,* सेंटर फ़ॉर स्टडीज़ इन सोशल साइंसेज़, कोलकाता

रेखा कृष्णन, *हेड ऑफ़ सीनियर स्कूल,* वसंत वैली स्कूल, नई दिल्ली

रश्मि पालीवाल, एकलव्य, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश

अजय दांडेकर, *विज़िटिंग फ़ेलो,* टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ़ सोशल साइंसेज़, मुंबई

प्रीतीश आचार्या, *रीडर,* रीजनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ एजुकेशन, भुवनेश्वर, उड़ीसा

हिंदी अनुवाद

योगेन्द्र दत्त, सराय-सी.एस.डी.एस., दिल्ली

रविकान्त, सराय-सी.एस.डी.एस., दिल्ली

नरेश गोस्वामी, स्वतंत्र अनुवादक एवं शोधकर्ता

शिवानंद उपाध्याय, शोधार्थी, हिंदी, जनेवि, नई दिल्ली

कमल कुमार मिश्रा, इंडिपेंडेंट फ़ेलो, सराय-सी.एस.डी.एस., दिल्ली

सदस्य-संयोजक

किरण देवेंद्र, *प्रोफ़ेसर,* प्राथमिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

आभार

यह पुस्तक बहुत सारे इतिहासकारों, शिक्षकों और शिक्षाविदों की साझा कोशिशों का परिणाम है। हरेक अध्याय के लेखन, उस पर चर्चा और संशोधनों में कई-कई महीने का समय लगा है। इन चर्चाओं में हिस्सा लेने वाले सभी साथियों को हम धन्यवाद देना चाहते हैं।

बहुत सारे लोगों ने पुस्तक के अलग-अलग अध्यायों को पढ़ा है। विशेष रूप से हम निगरानी समिति के सदस्यों को धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने विभिन्न अध्यायों के प्रारंभिक पाठों पर अपनी टिप्पणियाँ दीं। नारायणी गुप्ता और कुमकुम रॉय ने निरंतर प्रोत्साहन और सहायता दी; रिचर्ड इवांस ने नात्सीवाद के बारे में लिखे गए अध्याय को पढ़ा – इन सभी को धन्यवाद। पांडुलिपियों पर जो भी सुझाव मिले, उन सभी को शामिल करने का हमने हर-संभव प्रयास किया है।

बहुत सारे संस्थानों और व्यक्तियों की सहायता के बिना इन पुस्तकों की ऐसी साज-सज्जा संभव नहीं थी। मासाई एसोसिएशन, नॉर्थ डकोटा स्टेट यूनिवर्सिटी लायब्रेरी, युनाइटेड स्टेट्स हॉलोकास्ट म्यूज़ियम, यूनेस्को पारज़ॉर प्रोजेक्ट और महिला विकास अध्ययन केंद्र, दिल्ली ने हमारे आग्रह पर अपने अभिलेखागारों से आवश्यक चित्र और अन्य सामग्री उपलब्ध कराई। कुछ तस्वीरें लायब्रेरी ऑफ़ कांग्रेस प्रिंट्स ऐण्ड फ़ोटोग्राफ़ डिविज़न, ज्यूइश हिस्टॉरिकल इंस्टीट्यूट, वॉरसॉ, पोलैंड, रबींद्र भवन फ़ोटो आर्काइव्ज़, और विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन से ली गई हैं। संजय बरनेला, मुकुल मांगलिक और वसंत सबरवाल ने चरवाहों और वनाश्रित समुदायों की तस्वीरों के अपने संग्रह का इस्तेमाल करने की हमें इजाज़त दी। पहनावे के इतिहास पर केंद्रित अध्याय के लिए तस्वीरें जुटाने के वास्ते हमने मालविका कार्लेकर से संपर्क किया जबकि क्रिकेट से संबंधित चित्रों के लिए हमने राम गुहा की मदद ली। अनीश वनायक ने चित्रों से संबंधित शोध में मदद दी। हम सराय-सी.एस.डी.एस. से जुड़े साथियों को धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने पुस्तक पर हुई चर्चाओं में सक्रिय भूमिका निभायी।

इस तरह की विषयवस्तु का अनुवाद हमेशा आसान नहीं होता, खासतौर से जबकि किताब कम उम्र विद्यार्थियों के लिए तैयार की जा रही है। इस चुनौती को देखते हुए अनुवादक टीम ने शब्दों के चयन, भाषायी प्रवाह और अवधारणात्मक अभिव्यक्ति को लेकर गहन विचार-विमर्श किया और कई महत्त्वपूर्ण सवालों पर बहस छेड़ी। आलोक राय, नरेंद्र व्यास और राजेंद्र प्रसाद तिवारी ने अनुवाद पर अमूल्य टिप्पणियाँ दी। हयात सिंह नेगी ने प्रूफ़ पढ़ा। संजय शर्मा इस पुस्तक की तैयारी के प्रत्येक चरण में हिस्सेदार रहे। उन्होंने न केवल पूरी किताब का अनुवाद जाँचा, कॉपी संपादन किया और प्रूफ़ रीडिंग की बल्कि विषयवस्तु को हिंदी माध्यम विद्यार्थियों के लिए सहज बनाने के सवाल पर चली विषयात्मक और रूपात्मक बहसों में भी उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया और कई अहम सुझाव दिए। अंतिम चरणों में परिषद् के भाषा विभाग एवं हिंदी प्रकोष्ठ के अध्यक्ष प्रो. रामजन्म शर्मा ने शैलीगत परामर्श देकर किताब को निखारने में मदद की। परिषद् की ओर से डी.टी.पी. ऑपरेटर अरविंद शर्मा और विजय कुमार तथा कॉपी एडिटर सतीश झा ने अपना पूर्ण योगदान दिया। इतने कम समय में काम पूरा कर देने और पूरी परियोजना में इतनी दिलचस्पी लेने के लिए हम इन सभी साथियों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

जिन्होंने इस किताब में अपना योगदान दिया है उन सभी के नाम किताब के अंत में देने का हमने हर मुमकिन प्रयास किया है। अगर भूलवश किसी का नाम छूट गया है तो हम ऐसे सभी साथियों से क्षमा माँगते हैं।

विषय-सूची

आमुख	iii
इतिहास और बदलती दुनिया	v
खण्ड I : घटनाएँ और प्रक्रियाएँ	**1-74**
1. फ्रांसिसी क्रांति	3
2. यूरोप में समाजवाद एवं रूसी क्रांति	25
3. नात्सीवाद और हिटलर का उदय	49
खण्ड II : जीविका, अर्थव्यवस्था एवं समाज	**75-116**
4. वन्य समाज एवं उपनिवेशवाद	77
5. आधुनिक विश्व में चरवाहे	97
आभार	117

0967X

विस्तारित शिक्षा के लिए

आप क्यूआर कोड के माध्यम से निम्नलिखित अध्यायों का उपयोग कर सकते हैं:

- किसान और काश्तकार
- इतिहास और खेल: क्रिकेट की कहानी
- पहनावे का सामाजिक इतिहास

ये अध्याय पिछली पाठ्यपुस्तक में मुद्रित किए गये थे, वही विस्तारित शिक्षा के लिये डिजिटल मोड में भी उपलब्ध कराये जा रहे हैं।